DSE - 4
SEM - VI

जापान का खुलना
[Opening of Japan]

जापान में तोकुगावा शासनकाल (1603-1867) में पूर्ण शांति बनी रही। आर्थिक दृष्टि से भी जापान की काफी प्रगति हुई। इस प्रकार जब जापान संसार से पृथक होकर सुख चैन की बंसी बजा रहा था कि 19वीं शताब्दी के मध्य में पश्चिमी देशों ने उसका द्वार थप थपाया और अंत में उसके एकांत जीवन को नष्ट कर उसे विश्व के रंगमंच पर ला दिया।

प्रारंभिक संपर्क :-

12वीं शताब्दी तक यूरोप के लोग जापान के नाम या अस्तित्व से परिचित नहीं थे। 13वीं शताब्दी में मंगोल दरबार में रहने वाले मार्कोपोलो ने पहले जापान का नाम सुना और उसके बाद पुनर्जागरण काल में यूरोप के नाविक जब एशिया के समुद्री मार्गों की छानबीन करने लगे तो वे जापान भी पहुँचे। 1543 ई० को सबसे पहले पुर्तगाली जापान में अपना कदम रखे। सातसुमा रियासत के लोगों ने उसका बड़ा सत्कार किया और वहाँ के डैम्यों ने उनसे अनेक अस्त्र-शस्त्र खरीदे और बंदूक तोप और बारूद बनाने की कला सीखी और 1555 ई० तक वे स्वयं बड़ी मात्रा में हथियार बनाने लगे।

प्रारंभिक पुर्तगाली यात्रियों के आगमन के कुछ वर्षों के बाद 1549 ई० में कुछ ईसाई पादरी भी सातसुमा पहुँचे। उनका भी जापानियों ने स्वागत किया और उन्हें धर्म प्रचार की स्वीकृति दी।

16 वीं शताब्दी के अंत तक स्पेनिश और 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में डच तथा अंग्रेज नाविक भी जापान पहुँचने लगे। यह यूरोपीय यात्री

Scanned with CamScanner

नागासकी में अपनी कोठियां बनाकर व्यापार करने लगे और ईसाई धर्म प्रचारक भी स्वतंत्रता पूर्वक धर्म प्रचार करने लगे। जापानियों ने शुरू में उन पर किसी तरह का प्रतिबंध नहीं लगाया।

जापानी प्रतिक्रिया :-

जब से जापान का पश्चिमी देशों से संपर्क कायम हुआ तब से उन्होंने लगातार उनके साथ अच्छा संबंध बनाए रखने का प्रयास किया। जापान ने यूरोपियों के व्यापार, धर्म ज्ञान, विज्ञान आदि में रुचि प्रदर्शित की और उनका समुचित आदर सत्कार किया। परंतु यूरोपियों का रवैया और उनकी नियत शुरू से ही खराब थी। वे आपस में झगड़ते थे। डच लोग अंग्रेज तथा स्पेनियों के खिलाफ जापानियों को भड़काते थे और अंग्रेज एवं स्पेनिश डचों की शिकायत करते थे। इस कारण जापानी उन्हें शंका की दृष्टि से देखने लगे साथ ही जापान के समुद्र तट के समीप इन यूरोपीय शक्तियों के बीच कई लड़ाइयां हुई। इन सारी घटनाओं ने जापान की धारणा में भारी परिवर्तन कर दिया। जापानी लोग उन्हें अवांछनीय तत्व समझने लगे और उनकी नियत पर संदेह बढ़ गया। इसी बीच एक घटना हुई। 1596 ई० में स्पेन का एक जहाज टूट गया और इसका मुख्य नियामक जापानी अफसरों के पास लाया गया। उसे स्पेनी ने यह कह दिया कि स्पेनियों की नीति यह है कि वह विदेशों में पहले व्यापारी और धर्म प्रचारक भेजते हैं और जब उनके अड्डे कायम हो जाते हैं तब वह फौज फौज का जल्दी से उस देश को जीत लेते हैं और अपने साम्राज्य में मिला लेते हैं। इस तरह की सनसनीखेज स्वीकारोक्ती से जापानी अधिकारियों के कान खड़े हो गए। इसके बाद यह खबर मिली कि मैक्सिको से एक स्पेनी बेड़ा मोलुक्कस जीतने

Scanned with CamScanner

के लिए चल पड़ा है। 1612 ई॰ में स्पेनियों ने जापानी तट का सर्वेक्षण भी शुरू कर दिया। इन सब बातों को देखकर शोगुन को विश्वास हो गया कि युरोपीय लोगों के मन में कपट है और इनकी सुरक्षा को खतरा है। सबसे पहले जापान ने ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों पर सख्ती से पाबंदी लगा दिया। 1623 ई॰ में इस्मीतसु जापान का शोगुन बना। उसका ख्याल था कि स्पेनी सभी बुराइयों की जड़ है। 1624 ई॰ में उसने आदेश दिया कि सभी स्पेनी जापान छोड़कर निकल जाए। जापान व्यापारियों को भी आदेश दिया गया कि वे मेक्सिको और फिलीपींस से व्यापार ना करे। इसमें पुर्तगालियों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। 3 अगस्त 1640 ई॰ को चार पुर्तगाली दुत और उनके संतावन (57) यात्रियों की हत्या कर दी गई। इस प्रकार जापानियों ने विदेशों से अपना संबंध तोड़ लिया और चीनी व्यापारियों को व्यापार करने को सीमित छूट दिया। क्योंकि चीनी जापान में सिर्फ व्यापार ही कर रहे थे। इस प्रकार जापान ने अपने आपको अगले दो शताब्दियों तक कठिन एकांतवाद में रखा।

रूस और इंग्लैंड से संपर्क :-

18वीं शताब्दी के प्रारंभ में प्रशांत महासागर में यूरोपियों की हलचल बहुत बढ़ गई। जापान के सागर में रूस के जहाज आने-जाने लगे। रूस जापान के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करना चाहता था। 1792 ई॰ में एक रूसी प्रतिनिधि दल जापान पहुँचा। उसे तुरंत नागासाकी में आदेश दिया गया कि वे केवल नागासाकी में ही उतर सकता है। 1804 ई॰ में एक दूसरा रूसी प्रतिनिधि दल नागासाकी पहुँचा और व्यापार के बारे में बातचीत चलाया लेकिन उसे उत्तर मिला कि जापान को विदेशी व्यापार की जरूरत नहीं है। इस कारण जापान और इसके संबंधों में बड़ा तनाव आ गया। लेकिन उस समय रूस यूरोप में

Scanned with CamScanner

नेपोलियन के साथ युद्ध में फंसा हुआ था। अतः जापान की ओर वह विशेष ध्यान नहीं दे सका।

रूस के बाद ब्रिटेन ने जापान में घुसने का प्रयत्न किया। 1793 ई० में मेकार्टेन को जापान जाने का आदेश हुआ। लेकिन जापान ने उसे आने की इजाजत नहीं दी। 1819 ई० में अंग्रेजों ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया और वे किसी तरह जापान में प्रवेश पाने का प्रयास करने लगे। इस क्रम में अंग्रेज और जापानी नाविक में 1824 ई० में एक मामूली टक्कर हो गई। इससे चीढ़कर जापानी अधिकारियों ने 1825 ई० में आदेश दिया कि यदि कोई विदेशी जहाज जापान में उतरेगा तो उसे गोली मार दी जाएगी। लेकिन 1842 ई० में इस कानून को कुछ नरम किया गया। इसका मुख्य कारण था प्रथम अफीम युद्ध में जापान की पड़ोसी चीन की पराजय। इससे जापान को भय लगने लगा। अतः जापान ने डच बंदरगाहों का आयात कर अपनी सेना को सुदृढ़ किया और जापान अपनी एकांतिक नीति पर डटा रहा।

अमेरिका और जापान का संपर्क :-

जापान के ऊपर पश्चिमी संकट संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर से आया न कि यूरोप के किसी देश द्वारा और जिस प्रकार अफीम के युद्ध में चीन का द्वार विदेशियों के लिये खोल दिया था, उसी प्रकार अमेरिका के घुसपैठ के कारण जापान का द्वार भी विदेशियों के लिए खुल गया।

19वीं सदी के प्रारंभ से ही जापान में अमेरिका की रुचि बढ़ रही थी। क्योंकि प्रशांत महासागर में उसकी व्यापारिक गतिविधियां बड़े जोरों से बढ़ने लगी थी। वह एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार करना चाहता था। इस क्रम में ज्यों-ज्यों अमेरिका ने अपने पैर पश्चिम में

बढ़ा त्यों-त्यों जापान से उसका संपर्क अवश्यंभावी नज़र आने लगा। 1846 ई० में अमेरिकी जहाज कठिनाई में फंस गया और उसने जापान के एक बंदरगाह में शरण लेनी चाहि, लेकिन जापान ने इसके लिए अनुमति नहीं दी। अतः अमेरिका यह महसूस करने लगा कि प्रशांत महासागर के व्यावहारिक संबंध स्थापित किया जाए।

अतः

20 जुलाई 1846 ई० को अमेरिकी नौसेना का एक अधिकारी दो जहाज लेकर जापानी बंदरगाह पर उतरा और व्यापारिक संबंध के लिए प्रार्थना की। लेकिन जापानी सरकार ने इनकार कर दी। 1853 ई० में एक दूसरा अधिकारी चार युद्ध पोतों के साथ आया और जापान के बंदरगाहों में अमेरिकी युद्धपोत को ठहरने की सुविधा देने की प्रार्थना की। उसने उपहार के साथ सम्राट के नाम एक पत्र भी दिया। इसके बाद वह रवाना हो गया लेकिन रवाना होने से पहले उसने जापानियों को चेतावनी दे दी कि अगले वर्ष वह अधिक शक्तिशाली बेड़ों के साथ उत्तर लेने पुनः आएगा। फरवरी 1854 ई० में कमोडोर पेरी तीन भाप के जहाज और पांच यान लेकर फिर आ पहुंचा। पेरी आते ही जापान से संधि करने की जिद की। वस्तुतः शोगुन ने जल्दबाजी में डैम्यों की एक सभा बुलाई। इसमें विभिन्न मत प्रकट किए गए। एक पक्ष विदेशियों के विरुद्ध था तथा दूसरा पक्ष संधि के पक्ष में था। अतः काफी सोच विचार कर दूसरे पक्ष की बात मान ली। परिणामस्वरूप बहुत ही हर्ष पूर्ण वातावरण और सामाजिक रस्मों ~~के~~ के बीच कानागावा की संधि की वार्ता आरंभ हुई तथा 31 मार्च 1854 ई० को यह संधि संपन्न हो गई।

कानागावा की संधि के

अनुसार जापान ने अमेरिकी जहाजों को अपने बंदरगाहों पर ठहरने कोयला पानी लेने तथा यात्रियों नाविक और व्यापारियों के अच्छा व्यवहार करने की बात मान ली दोनों देशों के प्रतिनिधियों के आदान-प्रदान की व्यवस्था हुई। यह भी तय हुआ कि अन्य देशों को जापान में जो भी अतिरिक्त सुविधाएँ दी जाएगी वे संयुक्त राज्य अमेरिका को अपने आप उपलब्ध होगी।

यूरोपीय देशों से संधि :-

कानागावा की संधि के साथ ही विदेशियों के लिए जापान का द्वार खुल गया और शीघ्र ही अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि भी पेरी का अनुसरण करते हुए जापान पहुंचे और जापान के साथ संधि करने में सफल रहे। 1858 ई० तक ब्रिटेन, रूस और अमेरिका को जापान में विस्तृत अधिकार मिल गए और जापान ने सन्यास और एकांतिक जीवन का अंत कर दिया।

संधियों का परिणाम :-

इन संधियों के परिणाम यह हुआ कि इन संधियों ने सदियों से बंद जापान का द्वार विदेशी व्यापार के लिए खोल दिया और जापान के पृथकवादी जीवन का अंत होगया। जापान के द्वार खोलने से जापान पश्चिमी ताकत के रहस्य को जाना और उसके अनुसार ही अपने ~~आप~~ आप को ढालकर अपना सर्वांगीण विकास किया और कुछ ही दिनों में वह संसार की एक महाशक्ति बन गया। जापान का द्वार खुलने का परिणाम हुआ कि शोगुन की बड़ी बदनामी हुई और 1868 ई० में जापान में एक रक्तहीन क्रांति हुई और जापान में मेईजी की पुनर्स्थापना हुई।

Scanned with CamScanner